Thearyasamaj.org

संस्थापित १८६७ ई.

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आजीवन शुल्क ₹ १०००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) एक प्रति ₹ २.००

वर्ष : १२० ● अंक : २५ ● २३ जून, २०१५ अ. आषाढ़ कृ. सप्तमी, सम्वत् २०७२ ● दयानन्दाब्द १६१ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११६

ारायण स्वामी आश्रम नैनीताल में त्रिदिवसीय योग प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

आर्य समाज के प्रचार प्रसार में सभी आर्य एक जुटता से जुड़ें तभी देश शिखर पर पहुंचेगा।

-देवेन्द्रपाल वर्मा

ायण स्वामी आश्रम रामगढ़ ला नैनीताल में आर्य निधि सभा उत्तर प्रदेश ने ांक १३ से १५ जून २०१५ त्रिदिवसीय योग प्रशिक्षण विर का आयोजन किया समें स्वामी धर्मेश्वरानन्द स्वती मंत्री आर्य प्रतिनिधि ा उ.प्र. ने प्रशिक्षणार्थियों योग का प्रशिक्षण दिया जीवन निर्माण में योग की ता व उपयोगिता पर तीनों गम्भीर प्रकाश डाला।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ. के प्रधान श्री देवेन्द्रपाल ने कार्यक्रम उद्घाटन के सर पर बोलते हुये कहा यह आश्रम महात्मा ायण स्वामी ने साधना ली के रूप में बनाया था। जतक लाखों आर्यजनों ने य समय पर यहां आकर दर्शन प्राप्त किया है।

इस स्थल पर प्रति वर्ष ारोह में लाखों की संख्या में आर्य नर-नारी आकर वेदामृतपान करते थे। पहाड़ों पर अनेकों कुप्रथायें थीं। आर्य समाज ने उनका प्रबल विरोध करके उन कुप्रथाओं को कमजोर किया।

आज इस अवसर पर जब हम लाखों के स्थान पर हजारों की ही संख्या देख रहे हैं तो मन में कुछ ऊहापोह उठना स्वाभाविक है। आर्य समाज के कार्यकर्ता पहले संगठित रूप में सभी बुराइयों के विरूद्ध आवाज उठाते थे स्वयं उन बुराइयों से सदैव अपने को दूर रखकर समाज सुधार में योगदान देते थे। उनकी कथनी व करनी की एक रूपता सामाजिक बुराइयों को रोकने में सहयोगी होती थी। परन्तु आज हम अपने अन्दर झांक कर देखें तो हममें अपने दायित्व का सही बोध की कमी है समाज सुधारकी उत्कृष्ट आकांक्षा बन्द सी हो रही है आप हमसे जै राम जी की कहते हैं तो मैं भी आपसे जै राम जी की कहता हूँ। आप राधे-राधे कहते हैं मैं भी राधे-राधे कहता हूँ। हमारे विचारों में दृढ़ता व एकरूपता है ही नहीं। हमें आत्म निरीक्षण करके अपने अन्दर पनपती सभी बुराइयों से पूरी तरह से बचने का संकल्प लेना चाहिए हम आज आर.एस.एस., बजरंग दल आदि हिन्दू संगठनों के प्रेरक नहीं केवल उनमें भागदायी बन रहे हैं।

स्वामी रामदेव ने आर्य समाज से समाज सुधार के लिए भारत स्वाभिमान मंच का निर्माण करके आर्य समाज के भवनों व स्थानों पर कब्जा जमाने का उपक्रम किया व कर रहे हैं। आर्य समाजी जन बड़े गर्व से उनके संगठन में भागदायी बनकर कह रहे हैं यह तो आर्य समाज का ही काम है। उनका लक्ष्य आत्म प्रचार औषधि उद्योग का सम्वर्धन के साथ अलग एक मंच के माध्यम से सारे विश्व में अपने महत्व को बढ़ाना है। हमें सच्चा आर्य बनकर महर्षि दयानन्द के संस्थापित आर्य समाज आन्दोलन को संगठित रूप से चलाने के लिए कृत संकल्प होना चाहिए वेद विरूद्ध किसी भी बात के उठते ही दृढ़ता से उसके विरूद्ध आवाज उठाने का ओज धारण करना चाहिए। आर्य समाज के उद्देश्य सार्वभौम हैं। हमें उनके प्रचार-प्रसार के लिए दृढ़ होना चाहिए। पहाड़ों के मन्दिरों में आज भी पशु बलि जोरों से हो रही है, अनेकों कुप्रथायें फैली हुयी हैं। हमें उनका दृढ़ता से विरोध करने के लिए संगठित होने की आवश्यकता है। संसार के सारे प्राणी परमात्मा की सन्तानें हैं हमें किसी को मारने का अधिकार नहीं है। परन्तु धर्म के नाम पर ऐसे अधार्मिक कार्य चलाये जा रहे हैं। पशु हत्यायें की जा रही हैं उनके विरूद्ध प्रबल आवाज उठाने के लिए हमें स्वयं सच्चा आर्य बनकर आर्य समाज आन्दोलन को चलाने के लिए आगे बढ़ना है। सभी बुराइयों से रहित बनकर ही हम महर्षि दयानन्द के स्वप्न को साकार कर सकते हैं।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में कई हजार आर्य नर-नारियों ने भाग लेकर आर्य समाज के गौरव को बढ़ाया और जीवन निर्माण का संकल्प लिया।

योग प्रशिक्षण शिविर के मध्य में दिनांक १४.६.१५ को आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के पदाधिकारियों की एक आवश्यक बैठक हुयी जिसमें सभी पदाधिकारियों ने भाग लेकर प्रदेश में आर्य समाज की प्रगति, प्रचार-प्रसार के लिए गम्भीर चिन्तन किया।

●●●

वेदामृतम्

प्रनूनं ब्रह्मणस्पतिर् मन्त्रं वदत्युक्थ्यम्।
यस्मिन्निन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा
देवा ओकांसि चक्रिरे।। ऋग्-१.४०.५

(ब्रह्मणस्पतिः) वेदज्ञान का अधिपति परमेश्वर तथा विद्वान् मनुष्य (नूनं) निश्चय ऐसे (उक्थ्यम्) प्रशंसनीय (मन्त्रं) परामर्श को (प्रवदति) प्रकृष्ट रूप से कहता है, स्मिन्) जिसमें (इन्द्रः) इन्द्र, (वरुणः) वरुण, (मित्रः) मित्र और (अर्यमा) अर्यमा वाः) देव (ओकांसि) घर (चक्रिरे) किये जाते हैं।

हे मनुष्य! जब कभी तुझे किसी विषय में परामर्श की आवश्यकता होती है, तब र-उधर मारा-मारा क्यों फिरता है? वे लोग जो स्वयं अज्ञानी और अपूर्ण है, भला तुझे ा परामर्श देंगे? उनकी सलाह पाकर तो तू पथ भ्रष्ट ही होगा। अतः जब कभी तेरे में कर्त्तव्याकर्तव्य का संशय उपस्थित हो, तब वेदज्ञान के अधिपति ब्रह्मणस्पति प्रभु शरण में जा। अन्तर्मुख होकर सच्चे हृदय से अपनी समस्या उनके सम्मुख रख। वे श्य ही तेरे मन में ज्ञान का प्रकाश उत्पन्न करेंगे और तेरे संशय या भ्रान्ति की सब ली घटाओं को छिन्न-भिन्न कर देंगे। अन्धकार में ज्योति पाने के लिए तू ब्रह्मणस्पति के दिये हुए वेदों को भी देख सकता है कि उनमें क्या लिखा है, क्योंकि उनमें दिये परामर्श भी ब्रह्मणस्पति के ही परामर्श हैं। इसके अतिरिक्त वेदों के ज्ञानी, अनुभवी, ाचारी, मित्रभाव रखने वाले विद्वज्जन भी 'ब्रह्मणस्पति' हैं। यदि परमात्मा की प्रेरणा सकने का सामर्थ्य तुझमें नहीं, तो तू उन विद्वानों की ही शरण में जा। उनसे अपने ायों का निवारण करवा।

आओ, हम भी संशय की वेला में 'ब्रह्मणस्पति' प्रभु और 'ब्रह्मशस्पति' विद्वान् को अपना अन्तरंग बनाएँ, उसी से पूछें, उसीसे प्रेरित हों और उसी के सन्देश का पालन ें।

-डा. रामनाथ वेदालंकार

देवेन्द्रपाल वर्मा
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

आचार्य वेदव्रत अवस्थी
सम्पादक

Thearyasamaj.org

सम्पादकीय.....

तपःपूत सन्यासी महात्मा नारायण स्वामी का जीवन दर्शन हर आर्य के लिए ग्रहणीय

आर्य समाज के तपःपूत सन्यासी महात्मा नारायण स्वामी का जन्म एक सामान्य परिवार में हुआ था। उनके पिता जी सरकारी नौकरी में थे। उनकी शिक्षा ७ वर्ष की आयु में फारसी के मकतब में आरम्भ हुयी फारसी की ऊंचे दर्जे की किताबें पढ़ीं उनके साथ ही अरबी के व्याकरण को भी पढ़ा। पिता जी मोह के कारण अपने पुत्रों को अलग नहीं करना चाहते थे। इसी कारण उच्च शिक्षा बाधित रही। २३ वर्ष की उम्र में उनका विवाह हुआ। मुरादाबाद में कलक्टर के दफ्तर में क्लर्की की नौकरी आरम्भ की।

वे बचपन से ही कुछ धार्मिक प्रवृत्ति के थे, वे आत्म कथा में लिखते हैं मैने एक जगह पढ़ा कि शरीर में जितने रोम हैं उतनी बार राम नाम का जप करने से पाप का कोई प्रभाव शरीर पर नहीं पड़ता और रोम की संख्या ३७५०० बताई गयी थी बस नित्य नियमित जप प्रारम्भ किया। जब मैं अंग्रेजी स्कूल में पढ़ाई कर रहा था तो स्कूल में चर्चा हुयी आज एक बड़े सुधारक जिनका नाम स्वामी दयानन्द सरस्वती है-निकलने वाले हैं उत्सुकतावश मैं भी विद्यार्थियों के साथ रास्ते के किनारे उन्हें देखने के लिए खड़ा हो गया। कुछ ही देर में एक डोली में स्वामी जी सवार होकर सामने से निकले उनके तेजस्वी शरीर को देखकर अत्यन्त हर्षोल्लास हुआ। उनका व्याख्यान सुनने की इच्छा जगी परन्तु स्कूल के संस्कृताध्यापक ने कहा कि स्वामी जी अधर्म की बातें करते हैं उनके सुनने से पाप लगेगा। पाप के भय से व्याख्यान सुनने जा सका। जिसकी ग्लानि सारे जीवन हमें रही- यह उन्होंने अपनी आत्मकथा में लिखा है।उन्होंने संस्कृत की शिक्षा स्वतः अपने स्वाध्याय व मनो योग से की।

मुरादाबाद के सर्विसकाल में ही उनका आर्य समाज से सम्पर्क हुआ। जब सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा तो अज्ञान छटा। जीवन के क्रिया कलापों में खान-पान में परिवर्तन आया। आर्य समाज के नियमों को दृढ़ता से जीवन में उतार कर आर्य समाज का नियमानुसार सभासद बनकर आर्य समाज का मनोयोग से कार्य प्रारम्भ किया।

साधना की उत्कंठा को पूर्ण करने के लिए रामगढ़तल्ला नैनीताल में आश्रम बनाने के लिए जमीन खरीदी और त्याग भावना से उसकी रजिस्ट्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश (उस समय इसे संयुक्त प्राप्त कहा जाता था) के नाम की। उन्होंने अपने जीवन को महर्षि दयानन्द के मन्तब्यों के अनुरूप सर्वांगीण सुधार में लगा दिया कई उपनिषदों का भाष्य किया और अन्य अनेक ग्रन्थ लिखकर समाज को सुमार्ग दर्शन के लिए दिया। उन्होंनें जब सिंध में सत्यार्थ प्रकाश पर प्रतिबन्ध वहां की सरकार ने लगाया तब सत्याग्रह आन्दोलन हुआ जिसमें उनकी प्रमुख भूमिका रही। सरकार प्रतिबन्ध हटाने को विवश हुयी। निजाम हैदराबाद में जब हिन्दुओं पर निजाम का अत्याचार बढ़ रहा था आर्य समाज के कार्य में भी बाधा डाली जा रही थी निर्भीक होकर आपने हैदराबाद में प्रवेश किया। सत्याग्रह आन्दोलन चला जिसके अग्रणी नेता बनकर सभी आर्य नेताओं के साथ निजाम हैदराबाद को आर्य समाज के आगे घुटने टेकने को विवश किया। आर्य समाज की विजय दुन्दुभी बजी।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र., सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान रहकर सारे आर्य जगत को मार्ग दर्शन दिया। मुझे भी अपने शिक्षणकाल में गुरूकुल महाविद्यालय अयोध्या में (उस समय मेरी आयु १२-१३ वर्ष की रही होगी) उनके दर्शन और उनका प्रवचन सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। वे सौम्य स्वरूप, शान्त स्वभाव, मृदुभाषी सत्य निष्ठ दृढ़ प्रतिज्ञ आर्य सन्यासी थे उनका जीवन बाहर भीतर से पूर्णतया एक था। उन्होंने सम्पूर्ण जीवन आर्य समाज आन्दोलन को दृढ़ता से चलाया और देश को सुमार्ग दर्शन दिया।

आज आर्य समाज में जो भी शिथिलता व विकार आ रहे हैं हम सभी आर्यो को इसपर गम्भीर चिन्तन की आवश्यकता है। हम सभी महात्मा जी के उदात्त जीवन दर्शन पर गम्भीर चिन्तन करें और राष्ट्रोत्थान के लिए सभी बुराइयों से रहित सुखी समृद्ध समाज व राष्ट्र के निर्माण के लिए अपने जीवन में स्वामी जी के अनुरूप अपने आपके जीवन को पूर्ण आर्य बनाने को कृत संकल्प हों और सच्चे आर्य बनकर सम्पूर्ण मानव समाज को सच्चा आर्य बनाने का दृढ़ संकल्प लें। निश्चय ही ऐसे संकल्प से हम अपने जीवन समाज व राष्ट्र को सच्चा आर्य बनाने में समर्थ होंगे। आर्य समाज आन्दोलन को निष्ठा से चलाने के व्रती बनकर किसी भी बुराइयों से रहित राष्ट्र बनाने में समर्थ बनकर महर्षि दयानन्द के स्वप्नों को साकार करेंगे।

-सम्पादक

आर्य समाज सान्ताक्रुज में पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाज सान्ताक्रुज को अपनी धार्मिक गतिविधियों के विस्तार हेतु सद्गृहस्थ-विद्वान/प्रचारक/पुरोहित की आवश्यकता है। वेद प्रचार के पुनीत कार्य में अपनी सेवाएं देने के इच्छुक महानुभाव नीचे लिखे पते पर संपर्क करें। मिशनरी भावना के महानुभावों को प्राथमिकता दी जायेगी।

महामंत्री, आर्य समाज सान्ताक्रुज
लिंकिंग रोड, सान्ताक्रुज (वेस्ट) मुम्बई-४०००५४

विश्व योग - दिवस योग पर चर्चा

-डॉ. भानु प्रकाश आर्य
पूर्व अधीक्षक योग एवं पंचकर्म
राज.आयुर्वेद महाविद्यालय (लखनऊ विश्व विद्यालय)
लखनऊ

विश्व के १६६ देशों द्वारा दिनांक २१ जून, २०१५ को विश्व योग-दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया हैं एक अच्छी शुरूआत है यों तो योग किसी देश, जाति, सम्प्रदाय विशेष के लिये न होकर समस्त मानव मात्र के लिये है। इस विषय पर चर्चा करने से पूर्व यह आवश्यक है कि. इस योग की आवश्यकता क्यों हुई? इसका प्रारम्भ कब हुआ, कहाँ हुआ? कैसे हुआ? व किसने किया? इसकी चर्चा कर ली जावे।

जब से मनुष्य जीवन है तभी से उसे अनेक प्रकार की वेदनायें (कष्ट) हैं। इन वेदनाओं को नष्ट (दूर) करने के लिये यह जानना आवश्यक है कि यह वेदनायें होती कहाँ है इसके लिये मनुष्य के शरीर के मुख्य घटकों (आधार) की जानकारी होना नितान्त आवश्यक है वे तीन हैं सत्व (मन, बुद्धि, चित्त व अहंकार), आत्मा व शरीर। इसमें आत्मा निर्विकार होने से उसे किसी भी प्रकार की वेदना का होना संभव नहीं है। शेष सत्व (मन) व शरीर में ही वेदनाओं (कष्टों) का होना संभव है।

शरीर व मन की अनेक वेदनाओं के बचाव व उपचार हेतु मनुष्य मात्र को ज्ञान की चार शाखाओं द्वारा, जिन्हें श्रुति व कालान्तर में वेद की संज्ञा प्रदान की गयी, दिशा निर्देश प्रदान किये गये। इस हेतु एक उपवेद-आयुर्वेद के रूप में उपलब्ध हुआ जिसमें मनुष्य जीवन का उद्देश्य धर्म-अर्थ-काम व मोक्ष बताते हुए इनके लिये शरीर में आरोग्यता होना आवश्यक बताया गया 'धर्म-अर्थ-काम- मोक्षाणामरोग्यम् मूलमुन्तम्।'

साथ ही यह भी कहा गया कि ''योगे मोक्षे च सर्वासाम् वेदानामवर्तनम्'' अर्थात सभी प्रकार की वेदनाओं (कष्टों) का नाश तो केवल ''योग व मोक्ष'' में ही निहित है।

इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु, श्रुति (वेद) में निहित योग विषयक ज्ञान को षढ़ दर्शन के अन्तर्गत, महर्षि पंतजालि ने योग-दर्शन के रूप में प्रस्तुत किया है जिसे राजयोग या अष्टांग योग के नाम से भी जाना जाता है।

महर्षि पतंजलि तक योग विषयक ज्ञान, आप्त पुरुष द्वारा प्रदत्त वेद सम्मत् ज्ञान होने से मनुष्य मात्र की समस्त प्रकार की वेदनाओं को नष्ट करने में सक्षम् होने के कारण, अनुकरणीय है। तथा वह विश्व के किसी भी मनुष्य के लिये उतना ही लाभ प्रद है जितना भारत वर्ष में जन्म प्राप्त किसी मनुष्य के लिये, इसमें किसी जाति विशेष, देश विशेष या तथाकाथित धर्म (सम्प्रदाय) विशेष के लिये कोई अतिरिक्त लाभ या हानि होने की कोई सभावना नही है।

वेद समस्त महर्षि पतंजलि के योग दर्शन का समर्थन महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने भी किया है। शेष समस्त योग विषयक संसार में प्रचलित ज्ञान, व्यक्ति विशेष द्वारा अपने हानि-लाभ की दृष्टि से प्रदान किया गया है जो शारीरिक व्यायाम तो हो सकता है परन्तु किसी भी रूप में मनुष्य को उसकी समस्त वेदनाओं के साथ अत्यन्तिक वेदना के नाश में सहायक सिद्ध नहीं हो सकता है।

योग एक ईश्वर प्रदत्त वह ज्ञान है, जिसके द्वारा कोई भी मनुष्य अपने मन, इन्द्रियों व शरीर पर पूर्ण नियन्त्रण प्राप्त कर आत्म-साक्षात्कार व आत्मा द्वारा परमात्मा का सान्निध्य प्राप्त कर सकता है। परमात्मा के सानिध्य व साक्षात्कार द्वारा वह अपनी अत्यन्तिक वेदनाओं को नष्ट कर परमानन्द को प्राप्त कर सकता है। क्यों कि आनन्द का स्त्रोत केवल परमात्मा में ही है संसार से तो मनुष्य केवल सुख व दुःख ही प्राप्त कर सकता है। इस हेतु महर्षि पंतजालि ने अपने योग-दर्शन के प्रारम्भ के सूत्र में कहा है ''अथ योगानुशासनम'' अर्थात- अब योग के अनुशासन का वर्णन किया जाता है इसक अगले सूत्र में योग की परिभाष स्पष्ट करते हुए'' योगश्चित्त निरोध के रूप में स्पष्ट किया कि योग केवल चित्त की वृत्तियों क निरुद्ध अवस्था में आ जाने प ही योग होना सम्भव है। चित्त की वृत्तियों के निरुद्ध अवस्था लाने का लाभ यह होता है कि शरीर में उपस्थित जीवात्मा रूप दृष्टा अपने स्वरूप में स्थि होकर आत्म-साक्षात्कार को प्राप करते हुए कालान्तर में समस्त सृष्टि के रचयिता सच्चिदानन्द स्वरूप परम पिता परमात्मा, ज कि वास्तविक दृष्टा है, क साक्षात्कार द्वारा मानव जीवन क परम लक्ष्य परमानन्द को प्राप्त होता हुआ समस्त प्रकार क वेदनाओं (अनुकूल व प्रतिकूल से भी मुक्त हो जाता है। इस योग हेतु जिन साधनों क व्यवहार में लाना होता है। इसक विस्तृत विवरण अपने योगदर्श में चार पादों के अन्तर्गत किय है। इसी में साधन याद क अन्तर्गत यम, नियम, आसन प्राणायाम प्रत्याहार, धारणा ध्यान व समाधि के रूप विभिन्न अभ्यासों को बताया गय है। उनके द्वारा बताये गये य सभी अभ्यास केवल शारीरिक अभ्यास न होकर मनोकायिक अभ्यास है। बिना यम (अहिंसा सत्य, अस्तेम, ब्रह्मचर्य, अपार्रह व नियम (शौच, सन्तोष, तप स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान) क व्यवहार में लाये, कोई भी मनुष आसन की स्थिति को प्राप्त ह नही हो सकता। पतंजलि क अनुसार आसन तो स्थिरत पूर्वक, सुखानुभूति सहित स्थि विशेष का नाम है जहाँ प प्रयत्नों की शिथिलता हो तथ ध्यान अनन्त में स्थापित हुअ होवे।

''स्थिर सुखमासनम्''
''प्रयत्नं शैथिल्य अनन्त समापत्तिभ्याम्।।''

क्रमशः अगले अंक में..

गुरूकुल महाविद्यालय ततारपुर हापुड़ (उत्तर प्रदेश)
प्रवेशार्थ सूचना

तपोनिष्ठ सन्यासी स्वामी मुनीश्वरानन्द सरस्वती त्रिवेदतीर्थ द्वारा संस्थापित गुरूकुल महाविद्यालय ततारपुर हापुड़ माध्यमिक संस्कृत शिक्षा परिषद, लखनऊ एव सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी से क्रमशः प्रथमा ६ से आचार्य (एम.ए.) तक मान्यता प्राप्त प्रथम श्रेणी का विद्यालय है संस्था में अध्ययन अध्यापन यज्ञ संस्कार कर्मकाण्ड संगणक (कम्प्यूटर) एवं शारीरिक शिक्षा का अध्यापन कुशल प्रशिक्षित आचार्यो द्वारा कराय जाता है। - प्रवेशार्थी तुरन्त आवेदन करें।

चौ. शीशपाल सिंह	डॉ. वेदपाल आर्य	ओमदत्त आर्य	डॉ. प्रेमपाल शास्त्री
अध्यक्ष	उपाध्यक्ष	प्रबन्धक	प्राचार्य
			मो. ६४१०४७५५८०

Thearyasamaj.org

रोहर.....

सरलता सत्यता सौम्यता की प्रतिमूर्ति

(एक भावांजलि दिनांक 12.12.2010 की–सभी के ज्ञानार्थ प्रस्तुत)–सम्पादक

आचार्य सत्यव्रत राजेश जी

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
उ.प्र., लखनऊ।

आर्य उप प्रतिनिधि सभा
नियाबाद की रजत जयन्ती
क्षेत्र से वैदिक युवा विद्वान
राजेन्द्र जी ने आकर
द समाचार सुनाया कि
नीषी पं. सत्यव्रत जी
श दिवंगत हो गये यह
कर बड़ा कष्ट एवं शोक
लेकिन विश्वास नहीं हो
था क्योंकि मैने उन्हें कल
:काल ही तो देखा है और
सामान्यरूप से बेत लेकर
रहे हैं। हुआ यह था कि मैं
रा गया हुआ था और मुझे
नाया प्रकाश जी अध्यक्ष एवं
ामंत्री मा. ज्ञानेन्द्र सिंह
का फोन आया कि आपको
नियाबाद रजत जयन्ती में
क्ष मनोनीत कर दिया है
दिन अनिवार्य रूपेण रहना
रा वापिसी टिकट अन्तिम
के बाद ही था लेकिन
के आग्रह को देखते हुए १
पूर्व ही मैं चल पड़ा और
में राजकोट से चल कर
मदाबाद आ गया था वहां
रिद्वार-अहमदाबाद से मेरा
र्वेशन था अतः मैं अपने
में जाकर बैठा ही था कि
साथी कहने लगे मैं बाहर
कर आता हूँ रास्ते के लिए
आदि ले आऊँगा मैं
ला जब बाहर देखरहा था
दो व्यक्तियों के साथ मैने
राजेश जी को आते देखा
बड़ी प्रसन्नता हुई मेरे से
डिब्बे पीछे वे चढ़ गये मैने
ा कि रास्ते में कहीं भी भेंट
ी लेकिन वह मेरे भाग्य में
था मैं प्रयास करते हुए भी
नहीं सका अन्तिम दर्शन
ाये यह मेरा सौभाग्य था
ार्य श्री राजेश जी से मेरा
ाय १९६८ से भी पूर्व हो
था जब गुरूकुल
विद्यालय ततारपुर का
म्भ था और पूज्य स्वामी
रानन्द की महाराज ने
पुराने लगभग सभी
को आमंत्रित किया था
समय श्री राजेश जी श्री
व जी नैष्ठिक, श्री
ीश्वर वसु एवं श्री स्वामी
ावेश जी जैसे सभी विद्वान्
थे हम पढ़ रहे थे पूज्य
ी जी पढ़ा रहे थे वार्ता
ी चलते हमने सुना कि
जी तो गुरू रह गये चेले
बन गये। मैं बालक था
समझ नहीं सका तो पूज्य
ी जी से जैसे ही पूछा कि
ा अर्थ क्या हुआ तब
ी जी ने आचार्य राजेश

जी का परिचय देकर बताया कि ये मुझसे भी अधिक विद्वान हो गये हैं मुझे इस बात गर्व है इसी प्रकार श्री पं. रामप्रसाद जी वेदालंकार के विषय में बताया करते थे। प्रथम कक्षा की परीक्षा देने मेरठ गये थे तो आर्य समाज में पुरोहित पद पर प्रतिष्ठित श्री आचार्य राजेश जी और आपका विवाह तभी कुछ दिन पूर्व ही हुआ था वे किसी सनातनी परिवार से थी यज्ञ के प्रति श्रद्धा नहीं थी आचार्य जी दैनिक यज्ञ आर्य समाज के अतिरिक्त ऊपर अपने कमरे में किया करते थे एक दिन की बात है कि यज्ञ की तैयारी करके आचार्य जी ने कहा कि आओ देवी जी यज्ञ कर लेते हैं उन्होंने कहा कि मुझे रसोई का कार्य करने दो आप ही यज्ञ कर लीजिये यह कहकर वे रसोई का कार्य करने दो आप ही यज्ञ कर लीजिये यह कहकर वे रसोई में जाकर स्टोप जलाने लगी उन दिनों गैस के चूल्हे नहीं थे स्टोप में मिट्टी तेल डाला जाता था फिर उसमें पम्प द्वारा हवा भरी जाती थी और फिर उसमें नोजिल के माध्यम से अग्नि प्रज्ज्वलित होती थी-वे बोले देवी जी भोजन से पूर्व यज्ञ करना चाहिये लेकिन वे जिद पर अडिग रहीं लगभग २० मिनट तक प्रयास करने के बाद भी स्टोप प्रज्ज्वलित नहीं हुआ तो फिर आकर यज्ञ पर बैठ गई। मैं तो पहले से ही आचार्य जी के साथ यज्ञ में सहयोग कर ही रहा था यज्ञ के पश्चात् जैसे ही उन्होंने स्टोप जलाने का प्रयास किया वैसे ही वह प्रज्ज्वलित हो गया और भोजन बनाया तब आचार्य जी ने कहा देखा देवी जी यज्ञ का प्रभाव-यह प्रभु की इच्छा थी कि पहले यज्ञ करो-फिर भोजन पकाओ। उस दिन के बाद उन्होंने यज्ञ के प्रति अपनी आस्था जोड़ ली। उसके पश्चात् आपने एम.ए.पी.एच.डी किया और गुरूकुल वि.वि. कांगड़ी में वेद विभाग में प्रवक्ता पद पर प्रतिष्ठित हो गये आपकी सरलता और सात्विकता से सभी आबाल वृद्ध प्रभावित रहा करते थे-आप कहा करते थे कि मैं तो ग्राम में सामान्य बच्चों की तरह ही था पण्डित जी ने मुझे हाथ देखकर बताया था कि तेरे हाथ की रेखाएं कहती हैं कि तू कभी भी पढ़ नहीं सकेगा केवल पशु ही चराता रहेगा-लेकिन आर्य समाज के प्रभाव से आर्य विद्वानों के प्रवचनों को सुनकर वह भ्रान्ति दूर हो गई और मैं बड़ी अवस्था में पढ़ना प्रारम्भ करके इस योग्य बना कि वेदों की बातें लोगों को सरलता से बता सकता हूँ आपकी वाणी में सरस्वती का निवास था आप जब बोलने लगते थे तो लोगों को लगता था कि आप हृदय की गहराइयों से अपने अनुभव की बातों को सुना रहे हैं। अतः सदैव कुछ न कुछ नदीनता लिये हुए ही आपका उपदेश होता था जब कभी गुरूकुल ततारपुर आते तो बच्चों को बैठाकर बड़े सहज और सरल भाव से समझाया करते थे कि देखो गुरूकुल में पढ़कर कभी निराशा के भाव मन में नहीं लाना और अपना उदाहरण देकर प्रेरणा प्रदान किया करते थे आप जैसे सहारनपुर जनपद में पैदा हुए थे उसकी लौकिक भाषा बोली का प्रभाव भी आपकी वाणी में नहीं था आपको अनेक स्थानों पर सम्मानित किया गया, पदलिप्सा-राजनीति से दूर सदैव प्राचीन विद्वानों की तरह हंसमुख रहते हुए जीवन जिया है। पिलखुआ आर्य समाज के कार्यक्रमों पर बुलाया तो बच्चों में नैतिक शिक्षा की प्रेरणाएं दी-स्थापना में यज्ञ का ब्रह्मा बनाया था अपने बच्चे ही वेदपाठी थे उन्हें सदैव स्नेहिल आशीर्वाद देकर प्रोत्साहित करते रहते मैं भी पूर्णाहुति वाले दिन गया तो प्रत्येक ब्रह्मचारी की विशेषताएं बताकर उन्हीं के सामने उनका सम्मान बढ़ाया और कहने लगे कि इसी प्रकार अभ्यास करके एक दिन विद्वान् बन जाओगे। अपने गुरुजनों के प्रति सदैव नम्र बने रहना वे कहा करते थे कि मुझे जितना प्रसाद पूज्य स्वामी मुनीस्वरानन्द जी से मिला है उतना ही सारे गुरूजनों से मिलकर सीखा है अतः सबसे अधिक सम्मान पूज्य स्वामी जी को ही दिया करते थे और एक बात कहा करते थे कि स्वाध्याय में कभी प्रमाद न करना-गुरूजन तो केवल शंकाओं का समाधान कर सकते हैं याद करना-उसे अपनी कापी में लिखना और उसका बार बार पाठ करते रहना चाहिये तभी सुरक्षा रहेगी अवसर मिलने पर उसे सुनाना-सभाओं में सुनाने से झिझक निकल जाती है मन में विश्वास जागृत हो जाता है आप अपना सारा पूरा परिवार छोड़ कर गए है वि.वि. से अवकाश लेने के बाद भी आपने वेद प्रचार के कार्यक्रम को नहीं छोड़ा-देश के कोने-कोने में जाकर आप वेद कथायें वेद प्रचार सप्ताह वेद पारायण यज्ञ का आयोजन कराते ही रहते थे अन्तिम वेद प्रचार गुजरात की धरती को समर्पित रहा गुरु देव दयानन्द की जन्म भूमि गुजरात के अहमदाबाद नगर में आर्य समाज में कार्यक्रम का समापन करके हरिद्वार की गाड़ी में बैठ चुके थे और सब सामान विधिवत् व्यवस्थित करके रख दिया था गाड़ी चलने में अभी समय शेष था क्योंकि वह गाड़ी वहीं से बनकर चलती है अतः वे आर्य समाज के कार्यकर्ता अधिकारी जो साथ में आये थे वे बाहर प्लेटफार्म पर खड़े हो गये थे जब गाड़ी हरीबत्ती देकर चलने को हुइ तभी अन्दर आकर नमस्ते करनी चाही तो उन्होंने देखा कि आचार्य जी तो हरिद्वार की जगह हरद्वार पर पहुंच चुके हैं वे तो लम्बी यात्रा पर निकल गए जिस यात्रा की सभी को प्रतीक्षा रहती है अपनी सीट कुर्सी पर बैठे बैठे ही जैसे सन्ध्या कर रहे हों। शान्त भाव में बैठे थे जैसे निद्रा आ गई हो उन्हें जगा नहीं सके क्योंकि वे तो चिरनिद्रा में लीन हो चुके थे ऐसी निद्रा जो फिर नया जन्म लेकर आती है ऐसी यात्रा जो नए घर पर पहुंचाती है ऐसा पड़ाव जो वेद प्रचार की नई तैयारी के लिए चला था-सब सामान साथ था लेकिन कुछ साथ नहीं ले गए सब वहीं पर रह गया- गया तो मात्र वही जीवात्मा जिसे हम आचार्य जी गुरु जी- पंण्डित जी अथवा सत्यव्रत राजेश जी कहा करते थे-वे अपने सत्यता के व्रत का पालन करते हुए सच्चे अर्थो में राजेश बन गए उनकी अपस्या उनकी आस्था उनका विश्वास जो प्रभु की प्रेरणा से प्राप्त हुआ था उस प्राण को पूरा करते हुए प्रयास किया है मैं प्रणाम करता हूँ उस पवित्र आत्मा को जो पुण्यात्मा अपने पूर्व जन्मों के सद्कर्मो के साथ इस परिवार को पवित्र करने आई थी और ऋषि परम्परा को-पवित्र करने आई थी पुण्यधरा को हरिद्वार की पंचपुरी में जाकर प्रतिष्ठित हुई गुरूवर की जन्म स्थली की ओर जाकर प्रयास किया-मैं उस क्षण को कभी भूल नहीं पाता कि क्या ही अच्छा होता यदि मैं उनसे तभी आशीर्वाद ले लेता पर प्लेट फार्म पर बोलने की अपनी अन्तिम यात्रा के लिए शीघ्रता से जा रहे हैं मैं देखता ही रह गया और वे दूर निकल गए। यह तो विधि की व्यवस्था पर ही निर्भर करता है। आज मैं भावुकता से परिपूर्ण होकर अपने छोटे भाईयों की विशेष रूप में कहना चाहता हूँ कि हमारे से अधिक सौभाग्यशाली हैं कि आपने आचार्य जी जैसे पिता को प्राप्त किया उनके पुत्र बनकर उनके विचारों की-संस्कारों की पूंजी की रक्षा करनी है और उनके गौरव को बढ़ाना है। जीवन के अन्तिम क्षणों तक जैसे उन्होंने वेद प्रचार किया है उसी परम्परा की सुरक्षा एवं संवर्द्धन को धर्म मानकर चलने से ही उनके भरण से उद्धरण होने में कुछ सफलता मिलेगी प्रभो हमें सद्बुद्धि सामर्थ्य और शक्ति प्रदान करो। मैं अपने गुरूकुल पूठ गुरूकुल ततारपुर परिवार की ओर से तथा आर्यवीर दल उ०प्र० की ओर से एवं सन्यासी मण्डल की ओर से भावभीनी श्रद्धान्जलि अर्पित करता हूँ।

संचालक-
गढ़मुक्तेश्वर- हापुड़
मंत्री-आर्य प्रतिनिधि सभा,
उ.प्र. लखनऊ
मो.९८३७४०२१९२

Thearyasamaj.org

नारायण स्वामी आश्रम रामगढ़ तल्ला नैनीताल में अधिकारियों की मीटिंग दिनांक 14.6.15 के कतिपय चित्र

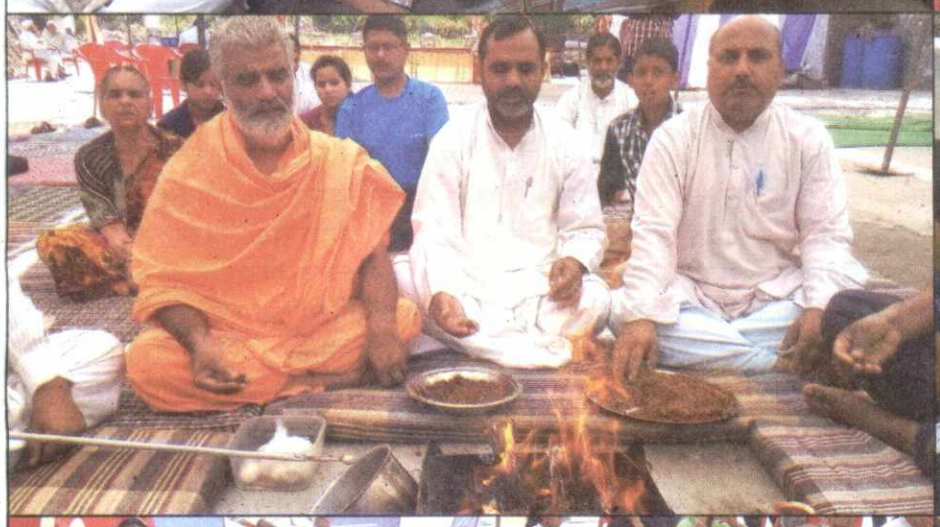

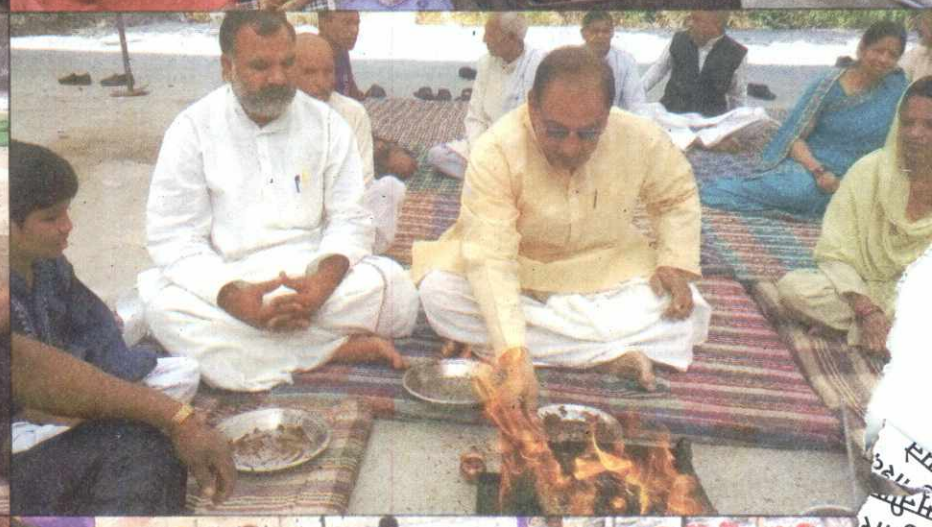

Thearyasamaj.org

रायण स्वामी आश्रम रामगढ़ तल्ला नैनीताल में आयोजित योग प्रशिक्षण शिविर के कतिपय चित्र

आर्य शिरोमणि महात्मा, नारायण स्वामी-एक महान व्यक्तित्व

डा० जय सिंह ''सरोज''
सिद्धांत सरोज, विद्या वाचस्पति, एम० एस-सी (कृषि) पी-एच०डी०
पूर्व उप प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश मो०- ९९९७१९९४०१, ०९४११५९३१०३

त्याग, तपस्या, संयम, साधना, आत्मिकबल, शास्त्र विलक्षणता, सदाचार, अदम्य साहस, निर्भीकता, निष्काम सेवा के परिचायक स्वनामधन्य आर्य शिरोमणि महात्मा नारायण स्वामी का जन्म एक पौराणिक परिवार में माघ सुदी पंचमी (बसन्त पंचमी की शुभ तिथि में) संवत् १९२२ में अलीगढ़ (प्राचीन नाम हरीगढ़) में हुआ था। इनके पिताश्री उस समय यहां सेवारत थे। इनका परिवार मूलरूप में श्रंगारपुर जनपद जौनपुर का रहने वाला था।

स्वामी जी की जीवन झांकी आर्य समाज के लिए एक आदर्श एवं उच्चकोटि की ऐतिहासिक अनमोल धरोहर है। ऐसे स्वनिर्मित महामानव की गुण गरिमा को शब्दों में व्यक्त करने में किसी भी लेखक की लेखनी भी अपने आपको अक्षम एवं बौना पायेगी। आधी अधूरी जानकारी के आधार पर जो भी लिखा जा रहा है आर्यो को पसंद आयेगा तथा प्रेरणाप्रद होगा।

स्वामी जी का प्रारम्भिक जीवन-

स्वामी जी के प्रारम्भिक जीवनकाल में संस्कृत एवं हिन्दी की शिक्षा की सुविधा नगण्य थी। पिताश्री पुत्रमोह के कारण इन्हें अन्यत्र भेजने के लिए तैयार न थे। अतः प्रारम्भिक शिक्षा मौलवी द्वारा फारसी में ग्रहण करने के लिए बाध्य होना पड़ा। इन्होंने अपने पैतृक गांव श्रंगारपुर में सेवानिवृत तहसीलदार पं० गंगा विशन द्वारा स्थापित फारसी के विद्यालय में प्रवेश लिया, गांव से लौटने के बाद पुनः फारसी एवं अरबी की व्याकरण को पढ़ा तत्पश्चात अंग्रेजी का अध्ययन शुरू किया।

२३ वर्ष की आयु में इनका विवाह हुआ। उस समय यह मुरादाबाद की कलक्टरेट में सेवारत थे। सम्मिलित परिवार की तात्कालिक मर्यादाओं के अनुरूप पांच वर्ष तक यह अपनी धर्मपत्नी को अपने साथ न रख सके। सत्यार्थ प्रकाश के अध्ययन के बाद गृहस्थ धर्म के महत्व को समझने के बाद यह अपनी धर्मपत्नी को मुरादाबाद अपने पास लाये।

आर्य समाज में प्रवेश :-

स्वामी जी प्रारम्भ से ही धार्मिक प्रवृत्ति के थे। उनकी शैवमत में रूचि थी परन्तु मूर्तिपूजा में आस्था नहीं रखते थे।

वह एक अंग्रेजी विद्यालय में पढ़ते थे। इन्हे ज्ञात हुआ कि एक बड़े सुधारक स्वामी दयानन्द सरस्वती आने वाले है। उत्सुकतावश सभी विद्यार्थी एवं अध्यापक विद्यालय के बाहर उस मार्ग पर आ गये जहां से स्वामी दयानन्द सरस्वती गुजरने वाले थे। एक बघ्घी में दिव्य व चमकते चेहरा वाले स्वामी दयानन्द जी वहां से गुजरे। सभी उनके दर्शन से अत्यधिक प्रभावित हुए।

सायंकाल स्वामी दयानन्द सरस्वती के प्रवचन होने की सूचना थी। उनके प्रवचन सुनने की बड़ी हार्दिक इच्छा थी परन्तु विद्यालय के संस्कृत अध्यापक ने अवगत कराया कि ''स्वामी जी अधर्म की बात करते हैं, उनके सुनने से पाप लगेगा।'' अतः न जा सके। इसका दुख इन्हें जीवन भर रहा।

शुरू में आर्य समाज के प्रति इनकी धारणा थी कि ''आर्य समाज सबका खण्डन करता है। इसके अपने कुछ सिद्धांत नहीं है।'' आर्य समाज के नियम पढ़ने के बाद यह गलत धारणा इनमें समाप्त हो गयी। आर्य समाज के सभासद श्री हरसहाय सिंह ने इन्हें सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने को दिया।

इसके अध्ययन के बाद इनकी आंखे खुल गयी और इन्होंने आर्य समाज के महत्व को समझा और रामगंगा के तट पर विधिवत् यज्ञोपवीत धारण कर प्रतिज्ञा की कि -

१. कभी मांस और मदिरा का सेवन न करूंगा।
२. कभी थियटर आदि न देखूंगा।
३. नियमपूर्वक संध्या और हवन करूंगा।
४. ईमानदारी और परिश्रम से जीविका चलाऊंगा।
५. यत्न करूंगा कि एक सद्गृहस्थ की तरह जीवन व्यतीत करूं।
६. संस्कृत एवं अंग्रेजी शिक्षा प्राप्ति का पूरा यत्न करूंगा।

इन्होंने उपरोक्त प्रतिज्ञा का अक्षरशः पालन किया तत्पश्चात लगभग ११ माह बाद इन्हें आर्य समाज मुरादाबाद में आर्य सभासद एवं उपमंत्री बनाया गया।

इनके आर्य समाज में प्रवेश के समय पौराणिक लोग आर्य समाजियों को गाली गलौच करते थे। इस समय इटेलियन विद्वान संस्कृत प्रेमी रिडेली कलक्टर थे। वह जानते थे कि यह आर्य समाज के मंत्री है। उन्होंने इन्हे बुलाकर कहा कि आप लोग इनके विरूद्ध रिपोर्ट क्यों नहीं करते है। इन्होंने उत्तर दिया ये लोग आर्य समाज की सेवा को समझते नहीं है। समझने पर स्वयं गाली देना बन्द कर देंगे। तब कलक्टर महोदय ने स्वयं ही कोतवाल को बुलाकर गाली गलौच करने वालों के विरूद्ध कार्यवाही के आदेश दिये फलस्वरूप आर्यो को गाली देना बन्द हो गया और आर्य समाज का प्रचार एवं शुद्धि आंदोलन निर्विघ्न चलने लगा। इन्होंने आर्य समाज की खातिर तहसीलदार जैसे उच्च पद पर हुई पदोन्नति को ठुकरा दिया। स्वामी जी ने कभी रिश्वत नहीं ली। इनकी ईमानदारी पर ही तात्कालिक कलक्टर पी० हेरीसन ने इनके सम्बन्ध में कहा था "He has a remarkable reputation for honesty"

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य जगत को दिशा दी, वैदिक सिद्धान्त दिये किन्तु आर्य समाज संगठन इनके परिश्रम का ही प्रतिफल है। वह आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के संस्थापक एवं स्तम्भ रहे। वह सार्वदेशिक सभा के संस्थापक एवं स्तम्भ रहे व १४ से अधिक वर्षो तक प्रधान रहे। गुरूकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन के वह संस्थापक एवं स्तम्भ रहे। यह आर्य प्रतिनिधि सभा के समाचार पत्र मुहर्रिक उर्दू (वर्तमान में आर्य मित्र) के संस्थापक, संचालक एवं सम्पादक रहे। आर्य समाज को सजीव रखने, अनुप्राणित करने, संघर्ष के लिए सक्षम बनाने और बलिदान के लिए सतत सन्नद्ध रखने में इनका सर्वोत्तम योगदान रहा है। हैदराबाद सत्याग्रह, सिन्ध सत्याग्रह के सेनानायकत्व, कन्या गुरूकुल शासनी तथा देहरादून के कृपा पात्र स्वामी जी के सभी आर्यजन सदैव ऋणी रहेंगे।

धर्मपत्नी का योगदान :-

यह १८९७ ई० में सपत्नीक रहने लगे। इनकी पत्नी एक सुशिक्षित साध्वी देवी थी जो गृह कार्य में दक्ष तथा अतिथि सत्कार में निपुण थी। इनकी धर्मपत्नी ने सदैव इनकी आर्य जीवन की त्रुटियों को दूर किया तथा एक सच्चा आर्य बनाने में बहुमूल्य योगदान दिया। वह इनके साथ बैठकर संध्या एवं हवन करती थी तथा रात्रि के समय सत्यार्थ प्रकाश एवं संस्कार विधि का अध्ययन एवं मनन करती थी।

वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश -

इनकी धर्मपत्नी को पुत्र हुआ। इसके बाद वह बीमार रहने लगी। समुचित चिकित्सा के वावजूद ३१ अगस्त १८९१ को स्वर्ग सिधार गयी तत्पश्चात ६ माह बाद पुत्र भी चल वसा। इसे संयोग ही कहा जायेगा कि इन्होंने ४३ वर्ष की आयु में वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश होने के विचार संजोये थे और लगभग तद्नुरूप १४ फरवरी १८९९ ई० को वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश किया।

श्री नारायण स्वामी आश्रम की स्थापना :-

वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश के बाद तप, साधना, स्वाध्याय की दृष्टि से उपयुक्त स्थल खोज में यह निकल पड़े। अयोध्या, हरिद्वार, ऋषिकेश, नैनीताल अल्मोड़ा आदि जनपदों में अनेक स्थलों का भ्रमण किया। अन्ततोगत्वा उद्देश्य की दृष्टि से वन आच्छादित एकान्त स्थल के रूप में २३ फरवरी १९२० ई० को वर्तमान नैनीताल स्थित रामगढ़ तल्ला की पहाड़ियों के मध्य सुरम्य घाटी के इस आकर्षक, मनोहर, रमणीक, शान्त स्थल का चयन किया तथा १ अप्रैल १९२० ई० को इस भूमि की रजिस्ट्री इन्होंने आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त (वर्तमान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश) के नाम कराई। यह स्थल काठगोदाम से २० मील दूर वीहड़ जंगल, ऊबड़-खाबड़ पथरीले पैदल मार्ग से ही जुड़ा था जिस पर जंगली जानवर रीक्ष आदि का मिलना एक आम बात थी तथा जाड़े के दिनों में भवालीरामगढ़ तल्ला तक का मार्ग बर्फ आच्छादित रहता था। निडर, निर्भीक, होकर ऐसे कठिन मार्ग से पैदल ही आश्रम तक जाना आना इनके ईश्वर विश्वासी एवं आत्मिक बलधारी होने का एक प्रबल प्रमाण है।

२० मई १९२० ई० को इस स्थल पर कुटिया निर्माण के कार्य का शुभारम्भ हुआ। दिसम्बर, ८ १९२० को आश्रम रामगढ़ तल्ला में आकर विधिवत रहना प्रारम्भ कर दिया। इससे पूर्व यह ठा० कृष्णदास सिंह की वाटिका में बने भवन में रहे और उनकी इच्छानुसार उनके पुत्र एवं अन्य विद्यार्थियों को अंग्रेजी, संस्कृत एवं धार्मिक ग्रन्थों को पढ़ाया।

श्री धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री इन दिनों आगरा में आर्य मित्र के सम्पादक थे। उन्होंने संगमरमर की पटिया जिस पर ''श्री नारायण आश्रम'' लिखा था आगरा से भेजी तभी से इसका नाम श्री नारायण आश्रम विख्यात हुआ।

आश्रम पर जल उपलब्धता का पूर्ण अभाव था। पास ही स्थित नदी से जल लाना कठिनतम कार्य था। इनके विद्यार्थी श्री लक्ष्मण सिंह ने एक कृषक बन्धु श्री गुलाब सिंह की सहायता से जल स्रोत की खोज की तथा सफलता पाई और नलिका स्थापित कर दी जो लक्ष्मणधारा के नाम से आज भी पुकारी जाती है तथा जिसमें अनवरत जल प्रवाह होता है। लक्ष्मण सिंह के ही सहयोग से इन्होंने सेब, नाशपाती, खुमानी, नीबू, नारंगी आदि के सैकड़ों पेड़ों का रोपड़ किया।

इस आश्रम पर श्री हरिद्वारी लाल सेवा निवृत मजिस्ट्रेट नहर अनूपशहर एवं आनन्द भिक्षु आनरेरी मैनेजर प्रेम महा विद्यालय वृन्दावन ने सन्यास की दीक्षा ली। श्री कृष्णलाल ने स्वयं स्वामी जी से सन्यास की दीक्षा ली जिसके नाम से भी कुटी का निर्माण हुआ। १२ जून, १९३५ ई० को प्रसिद्ध उद्योगपति जमुनादास बजाज सपरिवार पधारे।

इस आश्रम की हीरक जयन्ती २०-२२ मई १९९७ में स्वयं इस लेख के लेखक के संयोजकत्व में आर्य उप प्रतिनिधि सभा कुमाऊ मण्डल एवं आ०प्र० सभा उ०प्र० ने बड़ी धूमधाम से मनाई जिसमें आर्य जगत के प्रसिद्ध सन्यासी, उच्चकोटि के विद्वान तथा हजारों आर्यजनों ने भाग लिया। यह पुण्य आश्रम आज भी आर्यो की सद्प्रेरणा का महत्वपूर्ण स्थल है। इसकी पवित्रता को बनाये रखना हर आर्य का परम धर्म है।

सन्यास आश्रम प्रवेश :-

इन्होंने स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज से १० मई १९२२ ई० (बैसाख शुक्ल पूर्णमासी) को सन्यास आश्रम की दीक्षा ली। इस समय इनके पास दो हजार रूपये की धनराशि थी, जिसे इन्होंने निम्न शर्तो के साथ आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त को समर्पित कर दिया कि -

१. मूलधन खर्च न होगा।
२. इसका ब्याज दूस. तीसरे वर्ष वैदिक धर्म सम्बन्धी अच्छे ग्रन्थ लिखने वाले को पुरस्कार के रूप में दिया जाया करे।
३. यदि सं० २ में व्यय न हो सके तो फिर छोटे-छोटे ट्रेक्ट प्रकाशित किये जाया करे।
४. यदि कभी मुझे जरूरत हुई तो वह ब्याज मै ले सकूंगा और उस दशा में सं० २ व सं० ३ के काम बन्द रहेगे।

वानप्रस्थ एवं सन्यास आश्रम में इनकी दिनचर्या :-

नियमित दिनचर्या एवं समयबद्ध कार्य इनके जीवन की

शेष पेज ७ पर देखें....

Thearyasamaj.org

ठ.६ का शेष भाग...

क विशेषता थी। इनका हर कार्य इतना नियमित था कि उसे देखकर ड़ी मिलाई जा सकती थी। रात्रि आठ बजे सो जाना तथा अल्प सुबह बजे उठकर पांच बजे तक नित्य कार्यो से निवृत होकर साधना ा रात्रि आठ बजे तक स्वाध्याय, पठन पाठन, शास्त्र चर्चा, गूढ़ बयों पर मनन चिन्तन तथा शुभ साध्य कार्यक्रमों में समय व्यतीत रते थे। यह अपने जन्म दिवस पर आत्म निरीक्षण करते थे तथा अपना काम अपने हाथ सिद्धान्त के अनुयायी थे।

हित्यिक रचना :-

यह एक सिद्धहस्त लेखक थे। इन्होंने लगभग दो दर्जन च्चकोटि के साहित्य की रचनायें की। इनमें मुख्य है - वेद और ातन्त्रीय राज्य व्यवस्था, आत्म दर्पण, मृत्यु और परलोक, वैदिक ध्या रहस्य, प्राणायाम विधि, वैदिक धर्म क्यों ग्रहण करना चाहिए, ग दर्शन की टीका, कर्म रहस्य, वैदिक साम्यवाद, वैदिक धर्म ईश न आदि उपनिषदों की टीका, ऋषि दयानन्द और आर्य समाज, र्तव्य दर्पण, विद्यार्थी जीवन का रहस्य आदि।

य योगदान :-

१. आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर की श्री गंगाप्रसाद चीफ ज टिहरी के सहयोग से स्थापना तथा रजिस्ट्री आर्य प्रतिनिधि सभा युक्त प्रान्त के नाम कराई।

१६२६ में आर्य समाज रामगढ़ तल्ला की स्थापना।

महामारी प्लेग के समय अतुलनीय मानव सेवा।

नायक जाति में वेश्यावृत्ति जैसी कुरीति बन्द कराकर विवाह प्रचलन जैसे अनेकानेक समाज सुधार के कार्य किये।

ामी जी का स्वर्गवास :-

स्वामी जी की आंते बढ़ गई वह रूग्ण हो गये और त्ततोगत्वा १५ अक्टूबर १६४७ को बरेली में स्वर्ग सिधार गये और र्य समाज का एक देदीप्यमान नक्षत्र अस्त हो गया। परन्तु आर्य वारक कैसे होते हैं का आर्यो के समक्ष एक ज्वलन्त प्रश्न छोड़ गये। र्य जगत के सन्यासी, विद्वान एवं हजारों आर्य उनकी अन्त्योष्टि के मय अश्रुधारा से उन्हें श्रद्धान्जलि देने के लिए उपस्थित थे। इनके त्येष्टि स्थल पर अन्त्येष्टि यज्ञशाला एक आदर्श वेदी का निर्माण र्यो ने कराया। आज भी बरेली में उनकी स्मृति में अक्टूबर माह में दिक धर्म का प्रचार किया जाता है।

वह कितने महान थे जर्मनी के प्रसिद्ध दार्शनिक डायसन ल ने अपने समय की यात्रा में लिखे शब्दों ''यदि कहीं कोई ऐसा क्ति दिखलाई दे जो सबकी सेवा के लिए तत्पर हो, जिसकी आंखों प्रेम और सहानुभूति भरी हो तो समझ लो कि वह आर्य समाजी है'' ट हो जाता है।

स्वामी जी एक सच्चे सन्त थे। लखनऊ के सुप्रसिद्ध सर्जन ० आर० एन० भाटिया ने इनकी मृत्यु से पूर्व दिनांक २६.१०.१६४५ अपने विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए इनके सम्बन्ध में कहा था "He has renounced the world, so he is above pain. He is example for you and for your principal and professors." र्थात इन्होंने दुनिया को छोड़ दिया है, इसलिये कष्टों से ऊपर हो है। (अर्थात इन्हे कोई बात तकलीफ नहीं देती) यह एक उदाहरण हारे और तुम्हारे गुरूओं के लिए है।

संरक्षक-आर्य समाज काशीपुर
ऊधम सिंह नगर,
उत्तराखण्ड

रजत जयन्ती यज्ञ महोत्सव सम्पन्न

आर्य जगत् के गौरव डॉ. सोमदेव जी शास्त्री ने अपने म ग्राम में नैनोरा मन्दसोर (म.प्र.) में पिछले २५ वर्षो से चले रहे सामवेद पारायण यज्ञों की रजत जयन्ती का समारोह या जो १६ मई से २० मई तक चलां १६ मई को प्रातः जारोहण यज्ञ के पश्चात् पिपलिया मण्डी में नगर शोभायात्रा काली गई जिसका नेतृत्व स्वामी आर्यवेश जी एवं स्वामी सुमेधा द सरस्वती (सांसद) ने किया स्वामी प्रणवानन्द जी दिल्ली एवं मी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती सभा मंत्री भी उपस्थित रहे। पिछले वर्षो के बने ब्रह्मा भी आमन्त्रित किये गए आचार्य जयेन्द्र जी ा रहे और प्रतिदिन विभिन्न सम्मेलन होते रहे पूर्णाहुति पर स्त्री जी ने अपना उत्तरदायित्व योग्य सुपुत्र प्रणवदेव आर्य को ड़ी पहनाकर सौंप दिया सारी जनता भावुक हो गई कार्यक्रम यन्त सफल रहा ग्रामवासियों ने प्रसन्नता से आतिथ्य किया पूरे ा से आर्य महानुभावों ने आकर शास्त्री जी का आभार व्यक्त या।

महात्मा नारायण स्वामी की आत्मकथा से

- श्याम किशोर आर्य सिद्धान्त शास्त्री

माघसुदी ५ (बसंत) सम्वत १६२२ वि० को मेरा जन्म हुआ था। मेरे पूर्वजों का वतन तो श्रृंगारपुर जि० जौनपुर में है। परन्तु मेरा जन्म अलीगढ़ में हुआ था, जहां मेरे पिता सर्विस में थे। उनका देहान्त सन् १८८६ ई० में बावन वर्ष की आयु में हो गया था। मेरा विवाह २३ वर्ष की आयु में हुआ, परन्तु सर्विस और सम्मिलित परिवार की मर्यादानुसार मुझे प्रायः ५ वर्ष तक परिवार (पत्नी) से पृथक् रहना पड़ा मुझे मुरादाबाद के कलक्टर के दफ्तर में एक क्लर्की मिल गई थी परन्तु में वहां एकाकी रहा।

ऋषि दयानन्द के दर्शन तब हुये जब मैं एक अंग्रेजी स्कूल में पढ़ता था। एक दिन सूचना मिलने पर उत्सुकता से बहुत से विद्यार्थी और अध्यापक देखने के लिये स्कूल के बाहर उस रास्ते में आकर जहां से वे आकर गुजरने वाले थे खड़े हो गये। देखा थोड़ी देर में - एक डोली में स्वामी जी सवार होकर हम सबके सामने से जा रहे थे। उनके दिव्य और चमकते हुये चेहरे के देखने मात्र ही से ऐसाकोई न था जो प्रभावित न हुआ हो।

गृहस्थ जीवन का नियम निर्धारण - सन् १८६३ ई० में सम्वत १६४६ को

१. आर्य समाज के नियम और मन्तव्यों का दृढ़ता से पालन करना चाहिए।

२. ईमानदारी और परिश्रम से धन कमाना चाहिये। ईमानदारी और परिश्रम से कमांये हुये धन का ही उपयोग करना चाहिये।

३. समस्त कार्यो के करने का समय विभाग बनाना चाहिये और उसी के अनुसार कार्य करना चाहिये।

४. मांगना निकृष्ट कर्म है। अपने लिये यदि मांगना पड़े तो उससे मर जाना अच्छा है। कर्ज भी कभी नही लेना चाहिये।

५. स्त्रीव्रत होना चाहिये और स्त्रियों के साथ सद्व्यवहार करना चाहिये।

६. नाच तमाशा थियेटरों का देखना समय धन और आचरण का खून करना है। इसलिये इनसे सदैव बचना चाहिये।

७. निष्पक्षता श्रेयस्कर है। जनता के साथ व्यवहार करने में उसे कभी नहीं छोड़ना चाहिये।

८. स्वाध्यायशील होना और हृदय को उच्च सेवा के भाव से भरना चाहिये।

९. आराम-तलब और सुगमता-प्रिय न होकर कठिन कार्यो के करने का अभ्यास करना चाहिये। विरोध से डरना कायरता है।

१०. जीवन का अन्तिम भाग केवल परोपकार में व्यतीत करना चाहिये।

महात्मा गांधी का गुरूकुल में आना -

यह वह समय था जब महात्मा गांधी ने देश भर का भ्रमण आरम्भ किया था उनके साथ प्रोफेसर कोतवाल जो प्रेम महाविद्यालय में कुछ समय पूर्व प्रोफेसर रह चुके थे। वे वृन्दावन आये प्रेम विद्यालय को देखा। उसके बाद गुरूकुल आकर भोजन करने के बाद अध्यापक और ब्रह्मचारियों से बातचीत करते रहे। उस समय उनका भोजन केवल फल था। उनके सम्मानार्थ गुरूकुलीय यज्ञशाला में एक सभा की गई। मुख्याधिष्ठाता तथा कतिपय अन्य सज्जनों ने जिनमें एक दो ब्रह्मचारी थे भाषण देते हुये आशा प्रकट की कि उनके काम में सहयोग देने के लिये गुरूकुल से अच्छे व्यक्ति मिलेंगे।

गुरूकुल (वृंदावन) विद्यालय के दस कमरे जिसकी बुनियाद गवर्नर मेस्टन साहब ने रखी थी, तैयार हो गये। और कुछ के फोटो भी बुनियाद रखने के समय के उनके पास भेजे। उत्तर में उन्होंने एक पत्र भेजा जो इस प्रकार है-

Governor Camp U.P.
8th March, 1915

Dear Sir,

I am very much oblidge for your letter of the 4th instant and for the very in teresting photographs which you were so kind as to send me. It will always be a valuable souvenir of my in teesting visit to Gurkul in August, 1913 and I am very much oblidge to you for it.

I am very pleased indeed to have about the progress that has taken place and rapldity with which your school has been built. I ever find an opportuinty of revisiting mathura. I should very much like to come and see the Gurukul again. Mean while all best wishes for its centinued porosperitiy

I remain
your very truly
James meston

मथुरा जन्म शताब्दी १६२५ ई० की झलकी (अविस्मरणीय)

महर्षिदयानन्द जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में मेला रूप में १५ से २१ फरवरी १६२५ ई० को मनाई गई थी। उसकी व्यवस्था में प्रमुख महात्मा नारायण स्वामी ने अपने शब्दों में लिखा -

शताब्दी के मेले के कैम्प प्रान्तवार बनाये गये थे। देश के व देश से बाहर के दोनों के लिये पृथक-पृथक कैम्प थे। उत्सव में जापान, चीन, ब्रह्मा, अफ्रीका मारिशस मैडागास्कर, वेस्टइन्डीज जावा सुमात्रा और अमरीका के लोग भी शरीक हुये थे। कैम्प का प्रबन्ध प्रान्त बार था और सबका मुख्य प्रबन्धकर्ता एक था। स्वयं सेवक बहुसंख्या में वर्दी के साथ प्रत्येक प्रबन्धकर्ता के अधीन प्रत्येक कैम्प के पृथक-पृथक नियुक्त थे। बाजार में लगभग ५०० दुकाने प्रत्येक आवश्यक वस्तुओं की थी। मंडप अत्यन्त विस्तृत था। मेले की सफाई का बहुत अच्छा प्रबन्ध था, स्त्रियां शायद इतनी स्वतंत्रता के साथ बेखटके किसी भी मेले में नही घूम सकती थी। जितनी स्वतंत्रता उन्हें इस मेले में थी। बच्चा और स्त्री अपने कैम्प में पृथक हो जाने अथवा रास्ता भूल जाने पर स्वयं सेवकों तथा आर्य नगर निवासियों द्वारा तत्काल अपने-अपने कैम्प में पहुँचा दी जाती थी। मेले में जितने लोग शरीक हुये थे, इसका अन्दाजा केवल रेलों के टिकटों से लिया जा सकता है बड़ी लाइन के टिकट (मथुरा जंकशन) में एक लाख तिरानवे हजार (१६३०००) और छोटी लाइन के स्टेशन पर ६१ हजार (६१०००) टिकट मेले के यात्रियों के संग्रह किये गये थे। रेल के सिवा यात्री मोटर, लारियों, इक्को और तांगों पर आये थे उनकी संख्या इससे पृथक है। ग्राम

शेष पेज ८ पर देखें....

Thearyasamaj.org

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर./फैक्सः०५२२-२२८६३२८
प्रधान-०९४१२६७८५७१, मंत्री-०९८३७४०२१६२, सम्पादक-९५३२७४६६००
ई.मेल-apsabhaup86@gmail.com

सामवेद पारायण यज्ञ एवं वार्षिक सम्मेलन

(१ जून से ७ जून २०१५ तक)

आर्ष गुरूकुल पौंधा देहरादून (उत्तराखण्ड) मंसूरी के निकट १६वां वार्षिक सम्मेलन सामवेद पारायण यज्ञ के साथ सम्पन्न हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा श्री सोमदेव जी शास्त्री मुम्बई रहे आपने सत्यार्थ प्रकाश स्वाध्याय की भी कक्षा देकर सत्यार्थ प्रकाश का महत्व बताया योग शिविर भी प्रातः-सायं चलता रहा। ५-७ जून तक विशेष कार्यक्रम रहा जिसमें पूज्य स्वामी प्रणवानन्द जी का सान्निध्य रहा और वैदिक विद्वान रघुवीर जी वेदालंकार श्री यज्ञवीर जी शास्त्री, श्री वेद प्रकाश जी श्रोत्रिय, डॉ. ज्वलन्त कुमार जी अमेठी के अलावा डॉ. अन्नपूर्णा जी, स्वामी सुमेधानन्द जी सांसद (सीकर) श्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती सभा मंत्री, स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी सरस्वती का भी आशीर्वाद मिला इस वर्ष गत वर्षो की अपेक्षा अधिक उपस्थिति रही आचार्य धनन्जय जी एवं चन्द्रभूषण जी का पुरूषार्थ स्पष्ट परिलक्षित रहा था। कार्यक्रम संयोजन श्री रवीन्द्र शास्त्री एवं अजीत सिंह शास्त्री कर रहे थे। ब्रह्मचारियों के बौद्धिक एवं शारीरिक कार्यक्रम अत्यन्त प्रभावशाली रहे जनता पर प्रीााव पड़ा पूज्य स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती की तपस्या इसी प्रकार फलती फूलती रहे। ऐसी प्रभु से प्रार्थना है।

-दिनेश कुमार आचार्य
गुरूकुल पूठ

पृष्ठ.७ का शेष भाग...

के बहुत से लोग अपनी-अपनी बैलगाड़ियों पर आये थे। उनकी इतनी अधिक संख्या थी कि उनका एक गाड़ी कैम्प यू.पी. कैम्प के सामने पृथक लगाना पड़ा था।

बहुत से यात्री साधारण मुसाफिरों की तरह जाकर शहर में ठहरे थे। बहुत से निकट के रहने वाले पैदल आये थे। उस सबका तखमीना बहुत संकोच के साथ किया जाय तो ५० सहस्त्र से कम न होगा। इस प्रकार दो लाख चौवन हजार रेलों द्वारा और ५० हजार ये कुल ३ लाख से कुछ अधिक यात्री होते हैं। जो बाहर से आकर मेले में शरीक हुये थे। शहर के शरीक होने वाले इससे पृथक है।

इतना बड़ा धार्मिक मेला विशेषज्ञों का कहना था कि हजारों वर्षो के बाद हुआ है। शायद महाराजा अशोक के काल में इतने बड़े धार्मिक मेले हुये हो तो हुये हो।

उत्सव में पुलिस का कोई प्रबन्ध नही था। सारा उत्सव और मेले का प्रबन्ध आर्यवीरों के हाथ में था। परन्तु इतना उत्तम कि किसी का कुछ भी नुकसान नही हुआ। न कहीं चोरी की वारदात न ठगी की। न किसी को गांठ काटी गई न और किसी प्रकार से किसी को ठगा गया।

भोजन का पर्याप्त और अधिक से अधिक अच्छा प्रबन्ध था। छूत-अछूत किसी प्रकार का भेदभाव न था। इतना बड़ा मेला केवल शिक्षितों का था। कोई मैला कपड़ा पहने हुये कही भी दिखाई नही दे सकता था।

उत्सव की मुख्यता - प्रत्येक यात्री अनुशासन में था। जो नियम वहां के थे उसका पूरा - पूरा पालन किया जाता था।

पुलिस की सहायता-हमने पुलिस की सहायता इस तरह से ली कि पुलिस के उच्च अधिकारियों को सलाह देकर जो-जो रास्ते मेले की ओर आते थे उन सब पर दिन-रात पुलिस के पहरे का प्रबन्ध करा दिया गया कि वे किसी गुंडे को मेले की ओर न आने दे। पुलिस से इस प्रबन्ध करा लेने का फल यह हुआ कि मेला गुंडों से पाक साफ रहा। और किसी प्रकार की दुर्घटना न हो सकी। कैम्प में तो समझा जाता था कि पुलिस का कुछ प्रबन्ध नही है। परन्तु हमने इस प्रकार पुलिस की सहायता ली जो हमारे उत्सव के प्रबन्ध में बड़ी भारी सहायता देने वाली सिद्ध हुई।

शताब्दी (समारोह) नगर से बाहर मथुरा शहर में यमुना के किनारे पर एक झगड़ा हुआ।

यमुना के किनारे स्नानार्थ कुछ दयानन्द कालेज लौहार के विद्यार्थी गये थे। उनसे और कुछ बेसमझ यमुना के पंडों से झगड़ा हो गया। झगड़े की खबर ज्यों ही कैम्प में पहुंची कि सैकड़ों विद्यार्थी तथा अन्य यात्री उपर्युक्त विद्यार्थियों की सहायतार्थ शहर में जाने लगे।

खबर मिलते ही उन्हे शहर में जाने से रोक दिया गया और मैं स्वयं शहर में जाकर उन विद्यार्थियों को अपने साथ ले आया। एक विद्यार्थी का हाथ टूट गया था। उसका अपने सामने बैडेज कराके अस्पताल में दाखिल करा दिया। इस प्रकार झगड़ा बढ़ने से रूक गया।

कालेज के समस्त विद्यार्थियों को समय से पहले ही पंजाब भेज दिया गया।

विशेष - जिस दिन शहर में लोगों और विद्यार्थियों में कुछ झगड़ा हो गया था, उस झगड़े के बाद मथुरा के मजिस्ट्रेट और सुपरिंटेन्डेन्ट पुलिस मेरे पास आये और दबे लफ्जों में कुछ शिकायत की कि यदि प्रबन्ध अच्छा होता तो यह झगड़ा न होता। मैंने उनसे सहमत होते हुये कह दिया कि झगड़ा वहाँ हुआ जहाँ पुलिस का प्रबन्ध था। इसलिये यदि पुलिस का अच्छा प्रबन्ध होता तो बेशक झगड़ा न होता। हम तो केवल उतने ही प्रबन्ध के उत्तरदाता हैं जो हमारे नगर में हमारी ओर से स्वयं सेवक कर रहे हैं।

इस पर वे मुस्कराकर चले गये।

आर्यो यादकरों अपना स्वर्णिम काल और उस युग को वापिस लाने के लिये प्रतिज्ञाबद्ध हो जाओं। तुम्हारे पूर्व पुरुषों नेताओं शहीदों, प्रचारकों ने अपने जीवन से चमकता पथ बना कर दिया।

उनमें महात्मा नारायण स्वामी जी का स्थान स्वर्णिम दीप है।

उनका निधन १५ अक्टूबर १९४७ ई० को बरेली में हुआ। डा० श्यामस्वरूप, आचार्य विश्वश्रवा, चन्द्र नारायण एडवोकेट के द्वारा अन्तिम संस्कार किया गया।

वे महान लेखक, योगी, तपस्वी, आर्य सिद्धान्त, मर्यादा के पोषक सफल नेता थे। उन्हें विस्मरण करने पर आर्य जगत सूना हो जायेगा।

प्रधान
आर्य समाज चौक, इलाहाबाद

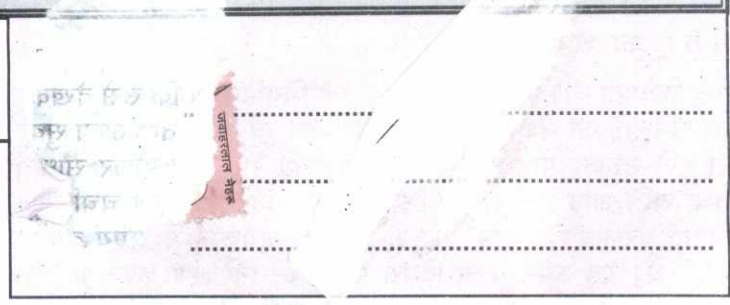

स्वास्थ्य चर्चा-

समस्या आपकी समाधान हमारा

आदरणीय डा. साहब,

सादर नमस्ते!

मेरी आयु लगभग ६८ वर्ष है मुझे विगत काफी दिनों से दोनों पावों के तलवे में गद्दी जैसी महसूस होती है, कभी झनझनाहट व कीी सुइयों के चुभन जैसी पीड़ा होती है, पांव में जूते या चप्पल पहनने में भी बहुत कठिनाई होती है। कृपया मेरी समस्या का समाधान करने का कष्ट करें।

-डी.पी. आर्य, मुजफ्फर नगर

प्रिय श्री आर्य,

आपने अपनी जो समस्या बताई है वह आपकी कमर से सम्बन्धित प्रतीत होती है। हो सकता है कभी आप गिरे हों जिससे आपके कमर के हिस्से की रीढ़ की हड्डी में चोट आई हो या आप लम्बे समय तक आगे झुकी स्थिति में कार्य करते रहे हों जिससे आपकी कमर के हिस्से वाली रीढ़ की हड्डी में रचनात्मक विकृति आ गयी हो।

इसके लिये आपको सबसे पहले अपने कमर के हिस्से का एक्स-रे (एल.एस.स्पाइन) ए.पी. व लेटरल व्यू में कराना चाहिये। एक्स-रे डिजिटल हो तो और भी अच्छा है। एक्स-रे के द्वारा आपके कमर के हिस्से की रीढ़ की हड्डी में आयी विकृति ज्ञात हो जावेगी। आपने जो लक्षण बताये हैं उसके अनुसार रीढ़ की हड्डी के एल-४ व एल-५ की स्पाण्डिलोसिस/स्पाण्डिलाइटिस या स्लिप डिस्क होने की सम्भावना अधिक प्रतीत होती है। इसके अतिरिक्त आपको अपने रक्त की जांच में शर्करा, कैल्शियम व विटामिन डी-३ की जांच कराना भी आवश्यक है क्योंकि इस आयु में हड्डियां कमजोर हो सकती हैं।

फिलहाल आप आगे झुकने वाले कार्यो को न करें। यात्रा के समय कमर में लम्बर बेल्ट को लगाकर रखें। ऊँचे नीचे व गड्ढे वाली सड़कों पर सावधानीपूर्वक चलें। खाली पेट की अवस्था में दिन में कई बार कमर पर हाथ रखकर कमर को पीछे की ओर झुकावें। पेट के बल लेटकर धीरे-धीरे किसी कुशल योग प्रशिक्षक के निर्देशन में, भुजंग या सर्पासन, शलभ या टिढ्ढा आसन का अभ्यास करें। जमीन या तख्त पर पेट के बल लेटकर कुछ समय दोनों हाथों को ठोढ़ी के नीचे लगाकर रखें। हमेशा जमीन या तख्त पर बिना तकिया लगाकर ही सोवें।

औषधियों में त्र्योदशांग गुग्गुल २ व नवजीवन रसकी १ गोली सुबह शाम महारास्नादि क्वाथ या रास्ना सप्तक क्वाथ ३०मिलि. की मात्रा के साथ लेवें। वृहत वात चिन्तामणि रस की एक-एक गोली सुबह शाम शहद के साथ लेवें। भोजन के पश्चात् अश्वगंधा रिष्ट १५ मि.ली. व दशमूलारिष्ट (रसायन अधिकार) १५ मि.ली. को एक चीनी के कप या शीशे के गिलास में लेकर बराबर जल के साथ सेवन करें अवश्य लाभ होगा।

एक्स-रे व रक्त की जांच कराकर विशिष्ट समाधान हेतु मेरे निम्न दूरभाष पर सायं ६ बजे से ९ बजे के मध्य सम्पर्क कर सकते हैं।

-डॉ. भानु प्रकाश आर्य
पूर्व वरिष्ठ परामर्शदाता चिकित्सक
राज.स्नातकोत्तर आयुर्वेद महाविद्यालय
एवं विद्यालय, लखनऊ (उ.प्र.)
चलभाष : ०९४१५१५८५७९

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक–आचार्य वेदव्रत अवस्थी, मुद्रक प्रकाशक–श्री सियाराम वर्मा, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, ५–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफ्सेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित